IJAER/Dec-Jan 2014/Volume-3/Issue-1/Article No-21/869-875 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा में स्वतन्त्रता से पूर्व विभिन्न शिक्षा-नीतियों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रियंका गुप्ता*[1], डॉ0 ऋतु भारद्वाज[2]

[1]शोधार्थी, जे.जे.टी.यू., झूंझनूं।

[2]शोध निर्देशिका, जे.जे.टी.यू., झूंझनूं।

मानव विकास का मूल साधन शिक्षा ही है अतः किसी भी राष्ट्र को नई दिशा दिखाने तथा समाज का उत्थान करने में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। भारतवर्ष में शिक्षा को प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च और विशिष्ट वर्गों में बाँटा गया है। इन सभी वर्गों में प्राथमिक शिक्षा को शिक्षा की नींव कहा गया है क्योंकि प्राथमिक शिक्षा ही मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण का आधार है। वर्तमान समय में लगभग सभी देशों में अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान है। प्राथमिक शिक्षा को सर्वसुलभ बनाने अर्थात् जन शिक्षा में परिवर्तित करने के लिए ही यह प्रावधान रखा गया है।

आधुनिक शिक्षा को भी दो उपकालों में विभक्त किया गया है-ब्रिटिशकालीन शिक्षा एवं स्वतन्त्र भारत में शिक्षा। ब्रिटिश शिक्षावादियों ने भारतीयों की शिक्षा को मातृ साक्षरता अर्थात् 3 त ;त्मंकपदहए˘तपजपदहए ़तपजीउमजपबद्ध तक सीमित रखा, क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि भारतीय उच्च शिक्षा प्राप्त करके उच्च पदों पर आसीन हों। स्पष्ट है कि इसमें 3 भ्. भ्मंतजए भ्ंदकए भ्मंक (हृदय, हाथ व मस्तिष्क) की शिक्षा पर जोर दिया गया। यह शिक्षा के तीनों प्रकार के उद्द्देश्यों ज्ञानात्मक, भावात्मक व क्रियात्मक की प्राप्ति में सहायक है। 1944 में सर सार्जेण्ट ने शिक्षा योजना को प्रस्तुत किया यह 40 वर्षीय योजना थी ब्रिटिश शासन में सारे देश में प्राथमिक शिक्षा का विकास हुआ।

*Corresponding Author